International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 3 Special Issue, January - December 2015
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

राजस्थान में पर्यटन : वर्षवार तुलनात्मक अध्ययन [2012से2015]

डॉ. मनोज कुल्हार, एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग,
श्री आर.आर. मोरारका राजकीय महाविद्यालय, झुंझुनूं

सारांश:-
राजस्थान के संदर्भ में पर्यटन एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उभरता हुआ क्षेत्र है, जो घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिये विशेष आकर्षण का केंद्र है| राजस्थान विविधताओं जैसे-भौगोलिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक-आर्थिक एवं ऐतिहासिक विविधताओं का अजायबघर कहा जा सकता है और यह विविधता पर्यटकों को सांकेतिक आमंत्रण देती है| अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में पर्यटन के महत्त्व को देखते हुए राजस्थान सरकार ने इसे उद्योग का दर्जा प्रदान किया है| राजस्व में वृद्धि के साथ-साथ पर्यटन ने होटल उद्योग, गाइड सेवा, कुटीर उद्योग, घरेलू व्यापार एवं राज्य की छवि को बहुत लाभ पहुँचाया है|छात्र ज्ञानवर्धन के लिए, व्यवसायी व्यापारिक संपर्क एवं बाजार खोज के लिये, कलाकार आत्मसंतुष्टि तथा आर्थिक लाभ के लिए और वैज्ञानिक अनुसन्धान हेतु पर्यटन से लाभ उठा रहे हैं|राजस्थान में उन्नत एवं विकसित पर्यटन के लिए अनेक अनुकूल दशाएं विद्यमान हैं, जो इसे भारत और विश्व के पर्यटन मानचित्र पर विशेष स्थान दिलाते हैं|इनमें समृद्ध और गौरवशाली सांस्कृतिक परिदृश्य, सुरम्य प्राकृतिक पर्यटन स्थल, वैभवशाली स्थापत्य, अगाध आस्था के केंद्र- धार्मिक स्थल प्रमुख हैं| परन्तु राजस्थान के पर्यटन क्षेत्र का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है क्योंकि इसे अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है| राजस्थान सरकार नीतिगत और संस्थागत प्रयासों के द्वारा इन चुनौतियों और बाधाओं से पार पाने की दिशा में अग्रसर है|

मुख्य शब्द :-
अर्थव्यवस्था, पर्यटन उद्योग, वैज्ञानिक अनुसंधान, पर्यटन मानचित्र, सांस्कृतिक परिदृश्य, संस्थागत और नीतिगत प्रयास|

भूमिका :-
पर्यटन किसी न किसी रूप में आदिकाल से ही मनुष्य की जीवनशैली का अभिन्न अंग रहा है|वैसे तो भारत के प्रत्येक राज्य में पर्यटन क्षेत्र का विकास और विस्तार हो रहा है परन्तु राजस्थान ने इस क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई है|राजस्थान भारत के उतर-पश्चिम में, उपमहाद्वीप के प्रसिद्ध थार मरुस्थल और मनोरम अरावली पहाडियों को समेटे हुए अनेकानेक भौगोलिक विशेषताओं के संदर्भ में उतना ही चित्ताकर्षक है जितना अन्य विविधताओं जैसे- संस्कृति, स्थापत्य,प्राकृतिक सौन्दर्य, इतिहास, खानपान, वेशभूषा, परम्परा और रीति-रिवाज़, रंग-बिरंगे मेले, उत्सव, त्यौंहार, धार्मिक आस्था के संदर्भ में|यह पर्यटकों को मनोरंजन के साथ-साथ एकांत और शांति भी प्रदान करता है| पर्यटन के लिए बहुलता आवश्यक है और राजस्थान इसकी पूर्ति करते हुए प्रत्येक श्रेणी के पर्यटकों को आकर्षित करता है| यह सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों के अतिरिक्त अनोखे मंदिरों, किलों, महलों तथा अन्य ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थलों से समृद्ध है| राजस्थान में पर्यटन मनोरंजन का साधन होने के साथ ही अर्थव्यवस्था के घटक के रूप में भी बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है| यह राज्य के सर्वाधिक राजस्व सृजकों में सेएक है| पर्यटन के अन्य महत्त्वपूर्ण परिणाम रोजगार और आय सृजन, सेवा क्षेत्र को प्रोत्साहन, विदेशी मुद्रा की प्राप्ति, विभिन्न पर्यटन स्थलों का संरक्षण, आधारभूत अवसंरचना का विकास तथा सॉफ्ट पॉवर के रूप में सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ावा देते हुए आपसी विश्वास, सद्भाव एवं सहयोग को समृद्ध करना हैं|राजस्थान में पर्यटन के विभिन्न स्वरुप जैसे-धार्मिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन, इकोट्यूरिज्म,प्राकृतिक पर्यटन, मनोरंजक पर्यटन, पुरातात्विक पर्यटन, विरासत पर्यटन, शैक्षिक पर्यटन, माइस ट्यूरिज्म, डार्क ट्यूरिज्म, वास्तुशिल्पीय पर्यटन आदि विद्यमान हैं| पर्यटन के इन सभी स्वरुपों को बढ़ावा देने हेतु राजस्थान पर्यटन विकास निगम [RTDC], राजस्थान राज्य होटल निगम तथा रिटमैन [राजस्थान पर्यटन और यात्रा प्रबंधन संस्थान] कार्यरत हैं|

अध्ययन के उद्देश्य:-
1.राजस्थान में वर्षवार पर्यटकों की संख्या में परिवर्तन का विशलेषण करना|

2.राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों और बाधाओं का अध्ययन करना|

शोधविधि:-
प्रस्तुत शोधपत्र में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है जिन्हें विभिन्न विभागों की वेबसाइटों, इंटरनेट, गूगल, विकिपीडिया, पुस्तकों ,शोधपत्रों, लेखों, पर्यटन विभाग की वेबसाइट www.tourism.rajasthan.gov.in तथा वार्षिक प्रगति प्रतिवेदनों आदि से एकत्र किया गया है, और आंकड़ों का विवरणात्मक विश्लेषण किया गया है, जिसके लिए सारणियों, आरेखों तथा आलेखों का प्रयोग किया गया है|

राजस्थान में पर्यटन परिदृश्य:-
अध्ययन के दौरान मोटे तौर पर जो तथ्य सामने आये, वो इस प्रकार हैं- भारत में आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान आने से अपने आप को नहीं रोक पाता है| अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के संदर्भ में भारत में राजस्थान राज्य का 5वां स्थान है और सर्वाधिक विदेशी पर्यटक जयपुर, उदयपुर में आते हैं तथा उनमें सर्वाधिक फ्रांसीसी, ब्रिटिश पर्यटक होते हैं| घरेलु पर्यटकों के सन्दर्भ में राजस्थान 7 वें स्थान पर है|सर्वाधिक स्वदेशी पर्यटक अजमेर [पुष्कर] में आते हैं| पर्यटकों के आगमन का वितरण माहवार असमान है| घरेलू पर्यटक सर्वाधिक सितम्बर माह में तथा विदेशी पर्यटक सर्वाधिक संख्या में मार्च महीने में आते हैं जबकि जून महीने में अत्यधिक गर्मी के कारण न्यूनतम संख्या में पर्यटक आते हैं| पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला राज्य का दूसरा सबसे बड़ा उद्योग है|पर्यटन को प्रचारित और प्रसारित करने हेतु राज्य सरकार पर्यटन के पञ्चवाक्य "पधारो म्हारे देश" तथा पर्यटक वाक्य "जाने क्या दिख जाये" के साथ-साथ मरू त्रिकोण तथा विशिष्ट सर्किट घोषित करने जैसी पहलें कर रही है|

सारणी:1-राजस्थान में पर्यटकों की संख्या

वर्ष	स्वदेशी पर्यटक		विदेशी पर्यटक		कुल पर्यटक
	संख्या	%	संख्या	%	संख्या
2012	28611831	95.17	1451370	4.83	30063201
2013	30298150	95.47	1437162	4.53	31735312
2014	33076491	95.59	1525574	4.41	34602065
2015	35187573	95.98	1475311	4.02	36662884

स्रोत:- वार्षिक प्रगति रिपोर्ट, पर्यटन विभाग, राजस्थान सरकार

राजस्थान में पर्यटकों की संख्या

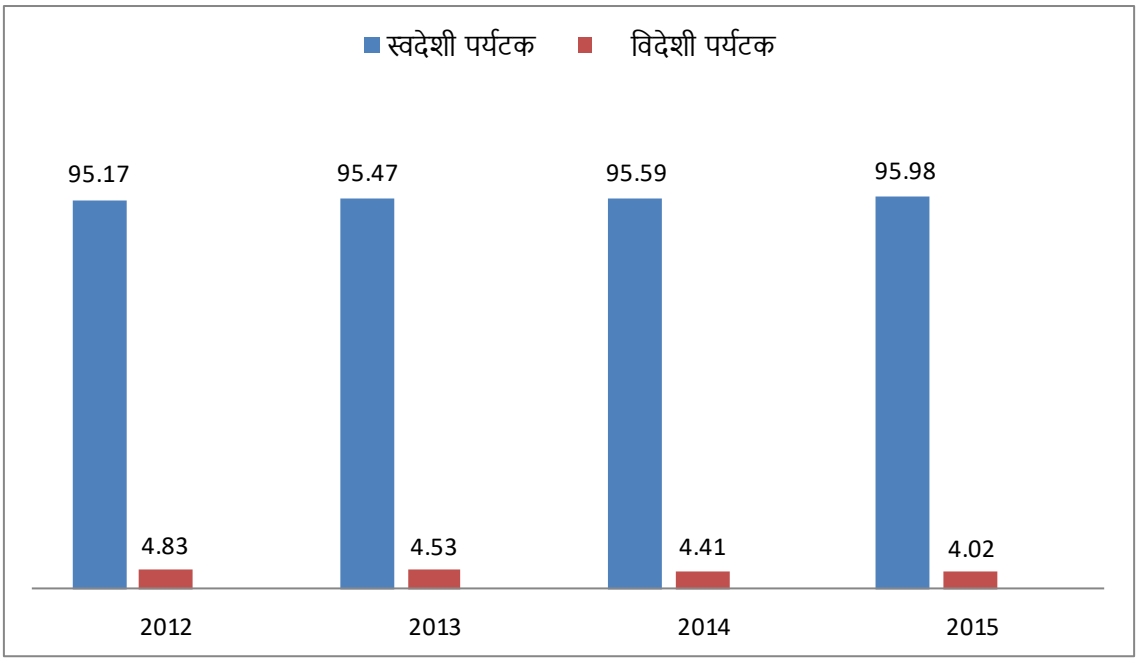

सारणी :2- पर्यटकों की संख्या में परिवर्तन

वर्ष	स्वदेशी पर्यटक		विदेशी पर्यटक		कुल पर्यटक	
	परिवर्तन	% परिवर्तन	परिवर्तन	% परिवर्तन	परिवर्तन	% परिवर्तन
2013	1686319	5.89	-14208	-0.98	1672111	5.56
2014	2778341	9.17	88412	6.15	2866753	9.03
2015	2111082	6.38	-50236	-3.29	2060819	5.96

स्रोत: अध्ययनकर्ता द्वारा स्वयं परिकलित

पर्यटकों की संख्या में परिवर्तन

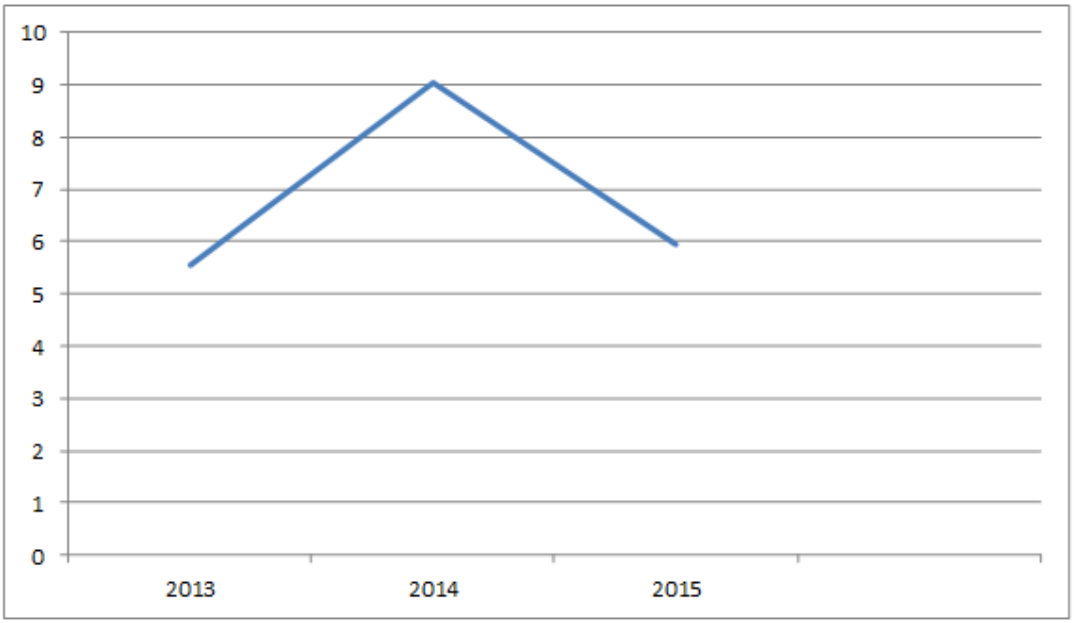

विश्लेषण से स्पष्ट है कि स्वदेशी पर्यटकों और कुल पर्यटकों की संख्या में अध्ययन अवधि के दौरान निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि विदेशी पर्यटकों की संख्या में दो वर्षों (2013 और 2015) को छोड़कर अन्य वर्षों में वृद्धि दर्ज की गई है| अध्ययन अवधि में स्वदेशी पर्यटकों की न्यूनतम और अधिकतम संख्या क्रमशः वर्ष 2012 (28611831) और वर्ष 2015 (35187573) थी|विदेशी पर्यटकों की न्यूनतम और अधिकतम संख्या क्रमशः वर्ष 2013 (1437162) और वर्ष 2014 (1525574) में थी| कुल पर्यटकों की संख्या के संदर्भ में स्वदेशी और विदेशी पर्यटकों का न्यूनतम प्रतिशत क्रमशः वर्ष 2012 (95.17%) और वर्ष 2015 (4.02%) में तथा इनका अधिकतम प्रतिशत क्रमशः वर्ष 2015 (95.98%) तथा वर्ष 2012 (4.83%) था| देशी पर्यटकों की संख्या में अध्ययन अवधि के दौरान सर्वाधिक परिवर्तन वर्ष 2014 (2778341) हुआ जो 9.17 % था|इसी प्रकार विदेशी पर्यटकों और कुल पर्यटकों की संख्या में अधिकतम परिवर्तन क्रमशः वर्ष 2014 जो 88412 (6.15%) था| देशी, विदेशी एवं कुल पर्यटकों की संख्या में न्यूनतम परिवर्तन वर्ष 2013 में हुआ जो 5.56% था| सारणियों, आलेखों और आरेखों से स्पष्ट है कि विदेशी पर्यटकों का कुल पर्यटकों के संदर्भ में प्रतिशत कम होने के कारण कुल पर्यटकों की संख्या में वृद्धि/कमी की प्रवृति स्वदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि/कमी का अनुसरण करती है|साथ ही विदेशी पर्यटकों की संख्या में वार्षिक परिवर्तन तुलनात्मक रूप से कम होने के कारण कुल पर्यटकों की संख्या में वार्षिक परिवर्तन, स्वदेशी पर्यटकों की संख्या में परिवर्तन के अनुसार है|

राजस्थान में पर्यटन विकास के समक्ष चुनौतियाँ:-

राजस्थान में पर्यटन क्षेत्र का समुचित विकास न होने का प्रमुख कारण इसके सम्मुख अनेकानेक बाधाएं व चुनौतियाँ हैं| इनमें से कुछ इस प्रकार हैं- आधारभूत अवसंरचना जैसे अपर्याप्त परिवहन के साधन व कनेक्टिविटी, जल,होटल, दूरसंचार, उर्जा आदि संबंधी चुनोतियाँ प्रमुख रूप से उभरी हैं| पर्यटकों की सुरक्षा भी इन्हीं में से एक है| पर्यटन स्थलों पर कुशल मानव श्रम की कमी, मूलभूत सुविधाओं जैसे- पेयजल, सुप्रबंधित टॉयलेट्स, प्राथमिक चिकित्सा, कैफेटेरिया की कमी, मौसम की प्रतिकूलता, छोटी दुकानों पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्डों की अस्वीकार्यता,जागरूकता का अभाव आदि अन्य चुनौतियाँ हैं जो राज्य में पर्यटन के विकास को अवरूध्द करने में सहायक बन रही हैं|

निष्कर्ष :-

राज्य की अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण सेक्टर होने के साथ-साथ पर्यटन एक उभरता उद्योग सिद्ध हो रहा है| केवल कुछ वर्षों को छोड़कर पर्यटकों की सभी श्रेणियों में निरंतर वृद्धि दर्ज की जा रही है| परन्तु अनेक चुनौतियाँ इस क्षेत्र के समुचित और पर्याप्त विकास को अवरुद्ध कर रही हैं| पर्यटन उद्योग के महत्त्व को देखते हुए, इसके विकास के लिए सरकार तथा जनसामन्य को सम्मिलित प्रयास करने की आवश्यकता है, जिसके प्रमुख कदम- सभी प्रकार की आधारभूत अवसंरचना का तीव्र विकास, पर्यटकों की सुरक्षा का उपयुक्त प्रबंध, आधिकारिक गाइड तंत्र की स्थापना, नागरिकों में पर्यटकों से सभ्य और उचित व्यवहार करने की भावना का विकास, ऑफ सीजन प्रमोशन आदि हो सकते हैं|

सन्दर्भ सूची :-

Ader, H. J., Mellenbergh, G. J. and Hand, D. J. 2007. Advising on reserch methods: A consultant`s companion, Huizen, The Netherland: Johannes van Kessel Publishing.

Chhipa, O. P. 2004. Environmental and Socio-economic Impact of International Tourism in Rajasthan: A Study of Pushkar Vally.
Proceedings of RGA XXXII conference, pp.30-34

Sharma, A.K., Sharma, M. 2011. Geo-Heritage Resources of Jodhpur (Tourism Impact and Assesment), P, XXXIX conf., pp. 57-63

चौरसिया, जि.कु. एवं खिन्दुका, नि. 2008: राजस्थान में पर्यटन उद्योग: बारां जिले का विशिष्ट अध्ययन, प्रो. सम्मलेन 35, पृ. 123-125 |

प्रगति प्रतिवेदन 2012-13 ,2013-14 और 2014-15, पर्यटन विभाग, राजस्थान|

पिंकु, एस. (2013): राजस्थान में पर्यटन से प्रभावित नगरीकरण संवृद्धि एवं पर्यावरणीय समस्याएं: भूमिका सोवेनियर एवं अब्सट्रेक्ट, 41 वींराजस्थान ज्योग्राफीकल एसोसिएशन, उदयपुर, राजस्थान, पेज 108 |

भल्ला, एल.आर. 2014, राजस्थान का भूगोल, कुलदीप प्रकाशन, जयपुर